चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	5-6-24	2	1-4

हिसार उच्च शिक्षा का हब बनता जा रहा है। यहां एशिया का प्रमुख कृषि संस्थान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय है। प्रदेश का पहला वेटरनरी विश्वविद्यालय लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विवि है। यहां का वेटरनरी कॉलेज 142 साल पुराना है। इसकी स्थापना 1882 में लाहौर में हुई थी। तकनीकी व विज्ञान शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय है। यशपाल सिंह की रिपोर्ट...

हरित क्रांति का अगुवा एचएयू - पांच दशक में प्रदेश में फसल उत्पादन सात गुणा तक बढ़ा

एचएयू: यूनिवर्सिटी ने 138 राज्यस्तरीय और 146 राष्ट्रीय स्तर की किस्में विकसित की

एचएयू एशिया के प्रमुख कृषि संस्थानों में से एक है। यह हरियाणा का एकमात्र कृषि विवि है। 2 फरवरी, 1970 को विवि की स्थापना हुई थी। उस समय प्रदेश का खाद्यान्न उत्पादन महज 25.92 लाख टन ही था। इस चुनौती से निपटने में एचएयू की अहम भूमिका रही। हरित क्रांति में अगवा रहे प्रदेश का खाद्यान्न अब सात गुणा बढ़कर 185 लाख टन तक पहुंच चुका है। देश के 60 प्रतिशत से अधिक चावल का निर्यात भी हरियाणा से ही होता है। यूनिवर्सिटी ने अब तक फल, सब्जी, तिलहन और चारा की 284 किस्में विकसित की हैं। इनमें 146 किस्में राष्ट्रीय स्तर की और 138 किस्में राज्यस्तर की हैं। एचएयू के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अब तक 590 एमओयू हो चुके हैं। विवि ने बीते तीन साल में फसलों की 44 किस्में अनुमोदित की हैं।

• भविष्य के प्रोजेक्ट्स: एचएयू कैंपस में एग्री टूरिज्म सेंटर तैयार किया जा रहा है। वेजिटेबल ग्राफ्टिंग यूनिट, यूनिवर्सिटी कैंपस में तैयार की गई है। विवि कैंपस में बायोटेक्नोलॉजी कॉलेज आरंभ किया है। गुरुग्राम में एग्री बिजनेस कॉलेज आरंभ होगा। यूनिवर्सिटी कैंपस में फिशरिज कॉलेज भी शुरू किया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	6.6.24	2	3-6

• हरियाणा कृषि विवि में पर्यावरण दिवस पर वनस्पति उद्यान में नवग्रह वाटिका का उद्घाटन

बृहस्पति गृह के लिए पीपल व मंगल के लिए खैर का पौधा सबसे ज्यादा लाभदायी

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर नवग्रह वाटिका का उद्घाटन किया गया। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने नवग्रह वाटिका में नौ गृहों पर आधारित लगाए गए पौधों का निरीक्षण भी किया। उन्होंने नौ गृहों के धार्मिक आधार पर लगाए गए पौधों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस ग्रह के लिए कौन सा पौधा शुभ है। उन्होंने बताया कि पौधों के धार्मिक महत्व को बताने वाली ये नवग्रह वाटिका विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में बनाई गई है ताकि वाटिका में आने वाले नागरिकों को गृहों से संबंधित पौधों के महत्व के बारे में जानकारी उपलब्ध हो सके।

नवग्रह वाटिका के उद्घाटन अवसर पर कुलपति प्रो. काम्बोज व अन्य।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि बृहस्पति गृह के लिए पीपल, बुद्ध गृह के लिए अपामार्ग, केतू के लिए कुश घास, शुक्र के लिए गूलर, सूर्य के लिए ऑक, शनि के लिए शमी, चन्द्र के लिए प्लाश, मंगल के लिए खैर व राहु के लिए दूब घास का पौधा सर्वोतम माना गया है। कुलपति ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना है ताकि प्रत्येक नागरिक बरसात के मौसम में विभिन्न प्रजातियों के अधिक से अधिक पौधे लगाकर उनकी देखभाल भी करें। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने बताया कि सभी नवग्रह वाटिका में ग्रहों के अनुसार एक-एक पौधा लगाया गया है। इन पौधों का उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों व हवन-पूजन के दौरान भी किया जाता है।

यह है नवग्रह पौधों की विशेषताएं

1. पीपल : पीपल की पूजा की जाती है।
2. अपामार्ग : हवन में इसकी लकड़ी का प्रयोग किया जाता है। बुध ग्रह की शांति के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है।
3. कुश : इस पौधे से बने छल्ले को हवन-पूजन के दौरान ऊंगली में पहना जाता है। कुश के आसन का प्रयोग भी होता है।
4. गूलर : इसकी लकड़ी का उपयोग शुक्र ग्रह की पूजा में किया जाता है।
5. ऑक : ऑक को मदार भी कहा जाता है। पूजन कार्यक्रम में इसका उपयोग किया जाता है।
6. शमी : शमी वृक्ष पर जल चढ़ाने से शनि ग्रह की शांति होती है। इसकी पत्तियों को भगवान शिव पर भी चढ़ाया जाता है।
7. प्लाश : हवन और अन्य मांगलिक कार्यक्रमों में इसके पत्तों और लकड़ी का उपयोग होता है।
8. खैर : इस पौधे को आराध्य माना जाता है। इसकी छाल को घिसकर बनाए गए लेप को पूजन में प्रयोग किया जाता है।
9. दूब घास : इसका उपयोग प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	6.6.24	3	1-4

पौधों के धार्मिक महत्व को बताती है नवग्रह वाटिका : प्रो. बीआर काम्बोज

वनस्पति उद्यान में नवग्रह वाटिका का किया गया उद्घाटन

विश्व पर्यावरण दिवस

प्रो. बीआर काम्बोज नवग्रह वाटिका का उद्घाटन करते हुए • पीआरओ

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर नवग्रह वाटिका का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने नवग्रह वाटिका में नौ गृहों पर आधारित लगाए गए पौधों का निरीक्षण भी किया।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि किस ग्रह के लिए कौन सा पौधा शुभ है। कौन से ग्रह को शांत करने के लिए किस पौधे की लकड़ी और पत्तों का प्रयोग किया जाता है। उसी के अनुसार वाटिका में पौधे लगाए गए हैं।

उन्होंने बताया कि पौधों के धार्मिक महत्व को बताने वाली ये नवग्रह वाटिका विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में बनाई गई है ताकि वाटिका में आने वाले नागरिकों को गृहों से संबंधित पौधों के महत्व के बारे में जानकारी उपलब्ध हो सके।

उन्होंने बताया कि बृहस्पति गृह के लिए पीपल, बुद्ध गृह के लिए अपामार्ग, केतू के लिए कुश घास, शुक्र के लिए गूलर, सूर्य के लिए आक, शनि के लिए शमी, चन्द्र के लिए प्लाश, मंगल के लिए खैर व राहु के लिए दूब घास का पौधा सर्वोतम माना गया है।

क्या है इन पौधों का धार्मिक महत्व

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. नीरज कुमार ने बताया कि सभी नवग्रह वाटिका में ग्रहों के अनुसार एक-एक पौधा लगाया गया है। इन पौधों का उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों व हवन-पूजन के दौरान भी किया जाता है। कार्यक्रम का आयोजन मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय एवं भू-दृश्य संरचना इकाई द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

इन पेड़-पौधों का ये है महत्व

- पीपल : पीपल की पूजा की जाती है।
- अपामार्ग : हवन में इसकी लकड़ी का प्रयोग किया जाता है। बुध ग्रह की शांति के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है।
- कुश : इस पौधे से बने छल्ले को हवन-पूजन के दौरान ऊंगली में पहना जाता है। कुश के आसन का प्रयोग भी होता है।
- गूलर : इसकी लकड़ी का उपयोग शुक्र ग्रह की पूजा में किया जाता है।
- आक : आक को मदार भी कहा जाता है। पूजन कार्यक्रम में इसका उपयोग किया जाता है।
- शमी : शमी वृक्ष पर जल चढ़ाने से शनि ग्रह की शांति होती है। इसकी पत्तियां भगवान शिव पर भी चढ़ाया जाता है।
- प्लाश : हवन और अन्य मांगलिक कार्यक्रमों में इसके पत्तों और लकड़ी का उपयोग होता है।
- खैर : इस पौधे को आराध्य माना जाता है। इसकी छाल को घिसकर बनाए गए लेप को पूजन में प्रयोग किया जाता है।
- दूब घास : इसका उपयोग प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	6.6.24	4	1-2

नवग्रह वाटिका का उद्घाटन करते प्रो. बी.आर. काम्बोज।

पौधों के धार्मिक महत्व को बताती है नवग्रह वाटिका : प्रो. काम्बोज

हिसार (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर नवग्रह वाटिका का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने नवग्रह वाटिका में 9 ग्रहों पर आधारित लगाए गए पौधों का निरीक्षण भी किया।

» वनस्पति उद्यान में नवग्रह वाटिका का किया उद्घाटन

प्रो. काम्बोज ने 9 गृहों के धार्मिक आधार पर लगाए गए पौधों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस ग्रह के लिए कौन-सा पौधा शुभ है। कौन से ग्रह को शांत करने के लिए किस पौधे की लकड़ी और पत्तों का प्रयोग किया जाता है। उसी के अनुसार वाटिका में पौधे लगाए गए हैं। उन्होंने बताया कि पौधों के धार्मिक महत्व को बताने वाली ये नवग्रह वाटिका विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में बनाई गई है, ताकि वाटिका में आने वाले नागरिकों को ग्रहों से संबंधित पौधों के महत्व के बारे में जानकारी उपलब्ध हो सके।

कुलपति ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना है, ताकि प्रत्येक नागरिक बरसात के मौसम में विभिन्न प्रजातियों के अधिक से अधिक पौधे लगाकर उनकी देखभाल भी करे। मानव जीवन में पेड़-पौधों का विशेष महत्व है। वृक्षों से एक ओर जहां इमारती लकड़ी मिलती है, वहीं दूसरी ओर पेड़-पौधे विभिन्न प्रकार की औषधियां बनाने में भी प्रयोग किए जाते हैं। इस अवसर पर विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	6.6.24	5	1-3

विश्व पर्यावरण दिवस पर वनस्पति उद्यान में नवग्रह वाटिका का उद्घाटन

पौधों के धार्मिक महत्व को बताती है नवग्रह वाटिका : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, सच कहूँ न्यूज।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर नवग्रह वाटिका का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने नवग्रह वाटिका में नौ गृहों पर आधारित लगाए गए पौधों का निरीक्षण भी किया। कुलपति ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना है ताकि प्रत्येक नागरिक बरसात के मौसम में विभिन्न प्रजातियों के अधिक से अधिक पौधे लगाकर उनकी देखभाल भी करे। मानव जीवन में पेड़-पौधों का विशेष महत्व है। वृक्षों से एक ओर जहां इमारती लकड़ी मिलती है वहीं दूसरी और पेड़-पौधे विभिन्न प्रकार की औषधियों बनाने में भी प्रयोग किए जाते हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने बताया कि सभी नवग्रह वाटिका में ग्रहों के अनुसार एक-एक पौधा लगाया गया है। इन पौधों का उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों व हवन-पूजन के दौरान भी किया जाता है। कार्यक्रम का आयोजन मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय एवं भू-दृश्य संरचना इकाई द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस अवसर पर विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

प्रो. बी.आर. काम्बोज नवग्रह वाटिका का उद्घाटन करते हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	6.6.24	12	4-5

पौधों का धार्मिक महत्व बताएगी वाटिका

हिसार। एचएयू के वनस्पति उद्यान में विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर नवग्रह वाटिका का उद्घाटन किया। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने नवग्रह वाटिका में नौ गृहों पर आधारित लगाए गए पौधों का निरीक्षण भी किया। प्रो. काम्बोज ने नौ गृहों के धार्मिक आधार पर लगाए गए पौधों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस ग्रह के लिए कौन सा पौधा शुभ है। उसी के अनुसार वाटिका में पौधे लगाए गए हैं। उन्होंने बताया कि पौधों के धार्मिक महत्व को बताने वाली ये नवग्रह वाटिका विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में बनाई गई है ताकि वाटिका में आने वाले नागरिकों को गृहों से संबंधित पौधों के महत्व के बारे में जानकारी उपलब्ध हो सके। उन्होंने बताया कि बृहस्पति गृह के लिए पीपल, बुद्ध गृह के लिए अपामार्ग, केतू के लिए कुश घास, शुक्र के लिए गूलर, सूर्य के लिए ऑक, शनि के लिए शमी, चन्द्र के लिए प्लाश, मंगल के लिए खैर व राहु के लिए दूब घास का पौधा सर्वोतम माना गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	6.6.24	3	3-4

वनस्पति उद्यान में नवग्रह वाटिका का उद्घाटन

एचएयू में नवग्रह वाटिका का उद्घाटन करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज। स्रोत : संस्थान

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर नवग्रह वाटिका का उद्घाटन किया गया। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. कांबोज ने नवग्रह वाटिका में नौ ग्रहों पर आधारित लगाए गए पौधों का निरीक्षण किया। उन्होंने बताया कि किस ग्रह के लिए कौन सा पौधा शुभ है। कौन से ग्रह को शांत करने के लिए किस पौधे की लकड़ी और पत्तों का प्रयोग किया जाता है। उसी के अनुसार वाटिका में पौधे लगाए गए हैं। उन्होंने बताया कि बृहस्पति ग्रह के लिए पीपल, बुध ग्रह के लिए अपामार्ग, केतू के लिए कुश, घास, शुक्र के लिए गूलर, सूर्य के लिए आँक, शनि के लिए शमी, चंद्र के लिए प्लाश, मंगल के लिए खैर व राहु के लिए दूब घास का पौधा सर्वोत्तम माना गया है। संवाद

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	05.06.2024	--	--

कुलपति ने विश्व पर्यावरण दिवस पर नवग्रह वाटिका का किया उद्घाटन

प्रो. बी.आर. काम्बोज नवग्रह वाटिका का उद्घाटन करते हुए

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर नवग्रह वाटिका का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने नवग्रह वाटिका में नौ गृहों पर आधारित लगाए गए पौधों का निरीक्षण भी किया।

प्रो. काम्बोज ने नौ गृहों के धार्मिक आधार पर लगाए गए पौधों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस ग्रह के लिए कौन सा पौधा शुभ है। उन्होंने बताया कि पौधों के धार्मिक महत्व को बताने वाली ये नवग्रह वाटिका विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में बनाई गई है ताकि वाटिका में आने वाले नागरिकों को गृहों से संबंधित पौधों के महत्व के बारे में जानकारी उपलब्ध हो सके।

कुलपति ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना है ताकि प्रत्येक नागरिक बरसात के मौसम में विभिन्न प्रजातियों के अधिक से अधिक पौधे लगाकर उनकी देखभाल भी करे। पौधे औषधियों बनाने में भी प्रयोग किए जाते हैं। इस अवसर पर विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि किरण न्यूज	05.06.2024	--	--

Hari Kiran News
12h ·

विश्व पर्यावरण दिवस पर एचएयू के वनस्पति उद्यान में नवग्रह वाटिका का उद्घाटन

-पौधों के धार्मिक महत्व को बताती नवग्रह वाटिका : प्रो. बीआर कम्बोज-

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर नवग्रह वाटिका का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने नवग्रह वाटिका में नो ग्रहों पर आधारित लगाए गए पौधों का निरीक्षण भी किया।

प्रो. कम्बोज ने नो ग्रहों के धार्मिक आधार पर लगाए गए पौधों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस ग्रह के लिए कौन सा पौधा शुभ है। कौन से ग्रह को शांत करने के लिए किस पौधे की लकड़ी और पत्तों का प्रयोग किया जाता है। उसी के अनुसार वाटिका में पौधे लगाए गए हैं। उन्होंने बताया कि पौधों के धार्मिक महत्व को बताने वाली ये नवग्रह वाटिका विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में बनाई गई है ताकि वाटिका में आने वाले नागरिकों को ग्रहों से संबंधित पौधों के महत्व के बारे में जानकारी उपलब्ध हो सके। उन्होंने बताया कि बृहस्पति ग्रह के लिए पीपल, बुद्ध ग्रह के लिए अपामार्ग, केतू के लिए कुश घास, शुक्र के लिए गूलर, सूर्य के लिए आँक, शनि के लिए शमी, चन्द्र के लिए पलाश, मंगल के लिए खैर व राहू के लिए दूब घास का पौधा सर्वोतम माना गया है।

कुलपति ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना है ताकि प्रत्येक नागरिक बरसात के मौसम में विभिन्न प्रजातियों के अधिक से अधिक पौधे लगाकर उनकी देखभाल भी करे। मानव जीवन में पेड़-पौधों का विशेष महत्व है। वृक्षों से एक ओर जहां इमारती लकड़ी मिलती है वहीं दूसरी ओर पेड़-पौधें विभिन्न प्रकार की औषधियों बनाने में भी प्रयोग किए जाते हैं।

क्या है इन पौधों का धार्मिक महत्व

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने बताया कि सभी नवग्रह वाटिका में ग्रहों के अनुसार एक-एक पौधा लगाया गया है। इन पौधों का उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों व हवन-पूजन के दौरान भी किया जाता है। कार्यक्रम का आयोजन मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय एवं भू-दृश्य संरचना इकाई द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

पीपल: पीपल की पूजा की जाती है। अपामार्ग: हवन में इसकी लकड़ी का प्रयोग किया जाता है। बुध ग्रह की शांति के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है। कुश: इस पौधे से बने छल्ले को हवन-पूजन के दौरान उंगली में पहना जाता है। कुश के आसन का प्रयोग भी होता है। गूलर: इसकी लकड़ी का उपयोग शुक्र ग्रह की पूजा में किया जाता है। आँक: आँक को मदार भी कहा जाता है। पूजन कार्यक्रम में इसका उपयोग किया जाता है। शमी: शमी वृक्ष पर जल चढ़ाने से शनि ग्रह की शांति होती है। इसकी पत्तियों भगवान शिव पर भी चढ़ाया जाता है। पलाश: हवन और अन्य मांगलिक कार्यक्रमों में इसके पत्तों और लकड़ी का उपयोग होता है। खैर: इस पौधे को आराध्य माना जाता है। इसकी छाल को घिसकर बनाए गए लेप को पूजन में प्रयोग किया जाता है। दूब घास: इसका उपयोग प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता है। इस अवसर पर विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम

दैनिक भास्कर

कार्बोहाइड्रेट्स की अधिक मात्रा के कारण साइलेज बनाने के लिए सबसे उपयुक्त है मक्का

हरे चारे के लिए 60-65 दिन में तैयार हो जाती है मक्का की फसल, 15 जून से 15 जुलाई तक कर लेनी चाहिए बिजाई

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा में खरीफ मौसम के लिए चारे की फसल के रूप में मक्का कई कारणों से अत्यधिक उपयुक्त है। यह किसी भी स्तर पर किसी भी प्रकार के पोषण-विरोधी घटकों से मुक्त है। यह फसल 60 से 65 दिनों में अत्यधिक स्वादिष्ट व बेहतर गुणवत्ता वाला हरा चारा प्रदान करती है। किसानों को 15 जून से 15 जुलाई तक इसकी बिजाई कर लेनी चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि मक्का किसी भी प्रकार के पोषण-विरोधी घटकों से मुक्त है। इसलिए किसी भी अवस्था में इसकी कटाई की जा सकती है। रेशम से दूधिया अवस्था में चारे में पोषक तत्व अधिक होते हैं। इसमें प्रोटीन की मात्रा 9-12 प्रतिशत, सुपाचकता 53-62 प्रतिशत और चारा स्वादिष्टता भी अधिक होती है। हरे चारे में पानी में घुलनशील कार्बोहाइड्रेट्स की अधिक मात्रा के कारण यह फसल साइलेज बनाने के लिए सबसे उपयुक्त है।

अफ्रीकन टाल किस्म देती है बेहतर पैदावार, प्रति एकड़ 32 किलोग्राम बीज पर्याप्त

मक्का की फसल (फाइल फोटो)

चारा अनुभाग के सस्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने बताया कि मक्का सभी प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है लेकिन अच्छी पैदावार के लिए अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी बेहतर है। चारे के लिए मक्का की फसल की बिजाई 15 जून से 15 जुलाई के दौरान पूरी कर लेनी चाहिए। बुआई के लिए प्रति एकड़ 32 किलोग्राम बीज पर्याप्त है। बीज को ड्रिल द्वारा या पोरा विधि से 30 सेमी की दूरी पर लाइनों में बोएं। पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी रखें। गुणवत्तापूर्ण व अधिक चारा पैदावार के लिए 32 किलोग्राम नाइट्रोजन व 16 किलोग्राम फास्फोरस प्रति एकड़ डालें। फास्फोरस की पूरी मात्रा (100 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट) तथा 16 किलोग्राम नाइट्रोजन (35 किग्रा. यूरिया) बिजाई के समय डालें तथा शेष 16 किलोग्राम नाइट्रोजन (35 कि.ग्रा. यूरिया) बुआई के 25-30 दिन बाद डालें। मानसून के अनुसार एक से दो सिंचाई फसल के लिए फायदेमंद होती है। हरे चारे की अधिक पैदावार प्राप्त करने के लिए, फसल की कटाई रेशम से दूधिया अवस्था (बुवाई के 60-65 दिन बाद) के दौरान करें।

180 से 210 क्विंटल प्रति एकड़ हरा चारा मिलता है

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि मक्का की हरे चारे की अधिक पैदावार के लिए अफ्रीकन टाल पूरे भारत के लिए अनुमोदित किस्म है। यह लम्बी, पत्तेदार व तेजी से बढ़ने वाली किस्म है जिसमें पत्ती से तने का अनुपात अधिक होता है। पौधे की औसत ऊंचाई 2 से 2.5 मीटर है और 180-210 क्विंटल प्रति एकड़ हरा चारा प्रदान करती हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	6.6.24	5	3-5

पौधों के धार्मिक महत्व को बताती है नवग्रह वाटिका : प्रो. काम्बोज

हिसार, 5 जून (विरेंद्र वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर नवग्रह वाटिका का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने नवग्रह वाटिका में नौ गृहों पर आधारित लगाए गए पौधों का निरीक्षण भी किया।

प्रो. काम्बोज ने नौ गृहों के धार्मिक आधार पर लगाए गए पौधों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस ग्रह के लिए कौन सा पौधा शुभ है। कौन से ग्रह को शांत करने के लिए किस पौधे की लकड़ी और पत्तों का प्रयोग किया जाता है। उसी के अनुसार वाटिका में पौधे लगाए गए हैं। उन्होंने बताया कि पौधों के धार्मिक महत्व को बताने वाली ये नवग्रह वाटिका विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में बनाई गई है ताकि वाटिका में आने वाले नागरिकों को गृहों से संबंधित पौधों के महत्व के बारे में जानकारी उपलब्ध हो सके। उन्होंने बताया कि बृहस्पति गृह के लिए पीपल, बुद्ध गृह के लिए अपामार्ग, केतू के लिए कुश घास, शुक्र के लिए गूलर, सूर्य के लिए आँक, शनि के लिए शमी, चन्द्र के लिए प्लाश, मंगल के लिए खैर व राहु के लिए दूब घास का पौधा सर्वोतम माना गया है। कुलपति ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना है ताकि प्रत्येक नागरिक बरसात के मौसम में विभिन्न प्रजातियों के अधिक से अधिक पौधे लगाकर उनकी देखभाल भी करे। मानव जीवन में पेड़-पौधों का विशेष महत्व है। वृक्षों से एक ओर जहां इमारती लकड़ी मिलती है वहीं दूसरी और पेड़-पौधें विभिन्न प्रकार की औषधियों बनाने में भी प्रयोग किए जाते हैं।

क्या है इन पौधों का धार्मिक महत्व : मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने बताया कि सभी नवग्रह वाटिका में ग्रहों के अनुसार एक-एक पौधा लगाया गया है। इन पौधों का उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों व हवन-पूजन के दौरान भी किया जाता है। कार्यक्रम का आयोजन मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय एवं भू-दृश्य संरचना इकाई द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

पीपल: पीपल की पूजा की जाती है। **अपामार्ग :** हवन में इसकी लकड़ी का प्रयोग किया जाता है। बुध ग्रह की शांति के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है। **कुश:** इस पौधे से बने छल्ले को हवन-पूजन के दौरान ऊंगली में पहना जाता है। कुश के आसन का प्रयोग भी होता है। **गूलर:** इसकी लकड़ी का उपयोग शुक्र ग्रह की पूजा में किया जाता है। **आँक :** आँक को मदार भी कहा जाता है। पूजन कार्यक्रम में इसका उपयोग किया जाता है। **शमी :** शमी वृक्ष पर जल चढ़ाने से शनि ग्रह की शांति होती है। इसकी पत्तियों भगवान शिव पर भी चढ़ाया जाता है। **प्लाश :** हवन और अन्य मांगलिक कार्यक्रमों में इसके पत्तों और लकड़ी का उपयोग होता है। **खैर:** इस पौधे को आराध्य माना जाता है। इसकी छाल को घिसकर बनाए गए लेप को पूजन में प्रयोग किया जाता है। **दूब घास:** इसका उपयोग प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता है। इस अवसर पर विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।